Original Article
ISSN (Online): 2582-7472

ShodhKosh: Journal of Visual and Performing Arts
January-June 2023 4(1), 1345–1348

CHALLENGES AND SOLUTIONS OF VALUE EDUCATION IN THE CURRENT SCHOOL CURRICULUM

प्रवर्तमान शालाकीय पाठ्यक्रम में निहीत मूल्य शिक्षा की चुनौतियों एवं समाधान

Dilipbhai Jaisingh Vasava [1]

[1] Assistant Professor, M.B. Patel College of Education, Sardar Patel University, Vallabh Vidyanagar

DOI
10.29121/shodhkosh.v4.i1.2023.3538

Funding: This research received no specific grant from any funding agency in the public, commercial, or not-for-profit sectors.

Copyright: © 2023 The Author(s). This work is licensed under a Creative Commons Attribution 4.0 International License.

With the license CC-BY, authors retain the copyright, allowing anyone to download, reuse, re-print, modify, distribute, and/or copy their contribution. The work must be properly attributed to its author.

OPEN ACCESS

ABSTRACT

English: In this research paper I have described my topic "Challenges and solutions of implicit value education in initial school curriculum" as much as possible. Inherent value education is an important and necessary part of initial school curriculum, which aims to make students aware of social, mental and moral values. This education not only makes students aware of personal development, but also promotes their sensitivity towards social responsibilities and moral values. Its ideal objective is to make students understand the basic principles of empathy, cooperation and harmony so that they can make a positive contribution to the development of society. It helps them to understand the basic feeling of co-existence and harmony with all living beings. Under implicit value education, students are taught the basic principles of mindset, harmony and social service through live examples, stories and thoughts. Through this, students learn to live a life with moral values. They are able to achieve success and satisfaction in their lives and spread virtues in the society. Inculcating value education is an important part of the school curriculum which prepares students as aware, conscious and ethical citizens of the society. It guides them in the moral direction required to follow the right path in their personal and social life.

Hindi: इस शोध प्रपत्र में मैंने मेरे विषय "प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम में निहीत मूल्य शिक्षा की चुनौतियाँ एवं समाधान" का यथासंभव वर्णन किया है। निहीत मूल्य शिक्षा प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम में एक महत्वपूर्ण और अवश्यक अंग है, जिसका उद्देश्य छात्रों को सामाजिक, मानसिक और नैतिक मूल्यों के बारे में जागरूकता प्रदान करना है। यह शिक्षा छात्रों को न केवल व्यक्तिगत विकास के प्रति जागरुक बनाती है, बल्कि समाज की जिम्मेदारियों और नैतिक मूल्यों के प्रति उनकी संवेदनशीलता को भी बढ़ावा देती है इसका आदर्श उद्देश्य छात्रों को सहानुभूति सहयोग और समरसता के मूल सिद्धांतों को समझाना है. ताकि वे समाज के विकास में सकारात्मक योगदान दे सकें। यह उन्हें सभी जीवों के साथ सहगति और समरसता की मूल भावना को समझने में मदद करता है निहीत मूल्य शिक्षा के तहत छात्रों को सजीव उदाहरण, कहानियां और विचारों के माध्यम से मानसिकता, समरसता और समाज सेवा के मूल सिद्धांतों का पाठ प्रदान किया जाता है। इसके माध्यम से छात्र नैतिक मूल्यों के साथ जीवन में सफलता और संतुष्टि प्राप्त करने के में सक्षम होते है और समाज में सद्गुणों की प्रसार करते है। निहीत मूल्य शिक्षा प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो छात्रों को समाज में जागरूक, सजग और नैतिक नागरिक के रूप में तैयार करता है। यह उन्हें उनके व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन में सही मार्ग पर चलने के लिए आवश्यक नैतिक दिशा में मार्गदर्शन करता है।

Keywords: Promotion, School, Awareness, Sensitivity, Responsibilities, Empathy, Curriculum, Harmony and Guidance etc., प्रवर्तमा, शालाकीय, जागरूकता, संवेदनशीलता. जिम्मेदारियों, सहानुभूति, पाठ्यक्रम, समरसता और मार्गदर्शन आदि

1. प्रस्तावना

प्रवर्तमा शिक्षा जो हमारे समाज के लिए आधारभूत सिद्धांतों और मूल्यों के प्रति छात्रों को जागरूक करने का माध्यम है, दे समाज में अच्छे नागरिकों का निर्माण करने का एक महत्वपूर्ण संवादक है। इसका महत्व आज के समय में और भी बढ़ गया है, क्योंकि हमारे समाज में नैतिकता, न्याय,

सहमति और सामाजिक जवाबदेही की मुख्य आवश्यकता है। इसी संदर्भ में "निहीत मूल्य शिक्षा नामक अद्वितीय प्रकार की शिक्षा ने अपनी अहम भूमिका बनाई है 'निहीत मूल्य शिक्षा' का उद्देश्य होता है छात्रों को उनके आदर्शों, मूल्यों और नैतिकता की पहचान करवाना और समझाना, ताकि वे समाज में उत्तम रूप से सफल और जिम्मेदार नागरिक बन सकें। इसके अलावा, यह छात्रों को सही और गलत के बीच अंतर को समझाकर उन्हें सोचने और उस पर कारवाई करने की क्षमता प्रदान करता है। प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रमों में निहीत मूल्य शिक्षा का आदान-प्रदान चुनौतियों से भरपूर है, लेकिन यह चुनौतियां उसके महत्व को कम नहीं कर सकती। इसे समाधान के रूप में हमें उचित पाठ्यक्रम डिजाइन, शिक्षकों के प्रशिक्षण, समुदाय संगठनों के साथ मिलकर काम करना और छात्रों को अपने मूल्यों को समझने और उन्हें अपने जीवन में लागू करने के लिए प्रोत्साहित करना होगा निहीत मूल्य शिक्षा के माध्यम से हम न केवल ज्ञान को बढ़ाते हैं, बल्कि समृद्धि और सहमति के साथ सामाजिक विकास को भी बढ़ावा देते हैं, जो एक समर्पण और राजीव समाज की नींव होती है।

2. प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम

प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम, शिक्षा प्रणाली का एक हिस्सा है जो आधुनिक शिक्षा प्रणालियों में अपनी अहम भूमिका निभाता है। इसका उद्देश्य छात्रों को विभिन्न विषयों, कौशलों और ज्ञान के साथ समृद्ध करना है जो उनके शैक्षिक और व्यक्तिगत विकास के लिए आवश्यक है। यह पाठयक्रम स्कूलों और कॉलेजों में प्रारंभिक शिक्षा के साथ-साथ उच्च शिक्षा तक कई स्तरों पर उपलब्ध होता है और छात्रों को अपने रूचिकर विषयों में मास्टरी प्राप्त करने का मौका देता है। प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम का पहला और महत्वपूर्ण लक्ष्य शिक्षा प्रदान करना है जो छात्रों को विभिन्न ज्ञान क्षेत्रों में परिप्रेक्ष्य और समझ प्रदान करता है। यह छात्रों को अकादमिक गुणवत्ता के साथ-साथ कौशल और उपयोगिता का ज्ञान प्राप्त करने में मदद करता है, जिससे उनका व्यक्तिगत और पेशेवर विकास होता है। दूसरा यह पाठ्यक्रम छात्रों को विभिन्न कौशल सिखाता है जैसे कि संवादना, समस्या समाधान और विश्लेषण कौशल इसके माध्यम से वे अपने विचारों को स्पष्ट रूप से व्यक्त कर सकते हैं और अपने विचारों को व्यवहारिक रूप से प्रयोग में ला सकते हैं। प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम का तीसरा महत्वपूर्ण लक्ष्य छात्रों की विचारशीलता, समस्या समाधान क्षमता और सामाजिक जागरूकता को विकसित करना है। छात्र इस पाठ्यक्रम के माध्यम से विश्व में घटित घटनाओं के प्रति अधिक जागरूक लेते हैं और उन समस्याओं के समाधान के लिए योग्य होते हैं। समग्र रूप से कहा जा सकता है कि प्रदर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम एक सशक्त और समर्पित नागरिक विकसित करने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रणाली है जो शिक्षा के साथ-साथ जीवन को सही दिशा देने का काम करती है। यह छात्रों को अधिक ज्ञानवर्धन, सामाजिक सद्भावना और आत्मसमर्पण के साथ एक सफल और सफलता से भरपूर जीवन की दिशा की और जाने में मदद करता है।

3. निहीत मूल्य शिक्षा

निहित मूल्य शिक्षा, शिक्षा प्रणाली का एक अहम हिस्सा है जो शिक्षा प्रक्रिया में छात्रों को पाठ्यक्रम के बाहर सीखने का मौका प्रदान करती है। इसका नाम "निहित मूल्य" है क्योंकि यह विद्यार्थियों को अनदेखे, अप्रत्याशित और अद्यतन तरीके से विकसित करने वाले मूल्यों को सिखाती है, जो कभी- कभी पाठ्यक्रम में सीखाएं जाने वाले ज्ञान से अधिक महत्त्वपूर्ण होते हैं। निहित मूल्य शिक्षा के माध्यम से छात्रों को समाजिक नैतिकता, नैतिक मूल्यों, सामाजिक अदार्श, सहयोग, जिम्मेदारी और नैतिक निर्णय लेने की कौशल क्षमताएँ विकसित करने के तरीके सिखाए जाते हैं। इस प्रकार में शिक्षा छात्रों के व्यक्तिगत विकास, सोचने की क्षमता और नैतिक दृष्टिकोण को प्राधिकृत करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसका एक और महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह शिक्षा प्रक्रिया केवल पाठ्यक्रम से सीखे जाने वाले ज्ञान को पूरा करती है। बिना निहित मूल्या शिक्षा के, शिक्षा अधूरी है, क्योंकि छात्र अकेले किताबों और शिक्षा सामग्री से नहीं सीखते, बल्कि उनके चारों ओर के माहाले से भी सीखते हैं निहित मूल्य शिक्षा, शिक्षा प्रक्रिया का एक प्रमुख हिस्सा है जो छात्रों को सिखाता है कि शिक्षा बस पाठ्यक्रम का एक सीमित हिस्सा नहीं होती, बल्कि यह उनके व्यक्तिगत और सामाजिक विकास का भी माध्यम होती है।

निहीत मूल्य शिक्षा के महत्व:

निहीत मूल्य शिक्षा के महत्व निम्नलिखित है-

1) **व्यक्तिगत विकास:** निहित मूल्य शिक्षा छात्रों के व्यक्तिगत विकास को समृद्ध करने में मदद करती है। यह उनके आत्मविश्वास को बढ़ाती है, उनके आत्मसमर्पण को बढ़ाती है और सोचने की क्षमता को विकसित करती है, जिसके परिणामस्वरूप मे अपने लक्ष्यों की प्राप्ति में सफलता प्राप्त करते हैं।
2) **सामाजिक जागरूकता:** निहित मूल्य शिक्षा से विद्यार्थियों को सामाजिक नैतिकता और सामाजिक जागरूकता की दिशा में महत्वपूर्ण ज्ञान प्राप्त होता है। इसके माध्यम से ये समाज में सही और गलत के बीच नैतिक अंतर को समझाते हैं और ठीक नैतिक मूल्यों का पालन करते हैं।
3) **सामाजिक सहयोग**: निहित मूल्य शिक्षा छात्रों को सामाजिक सहयोग की आदत डालती है। यह उन्हें टीम काम, साझा जिम्मेदारी और सहयोग में भाग लेने की क्षमता प्राप्त करवाती है, जो उनके व्यक्तिगत और पेशेवर विकास के लिए महत्वपूर्ण है।

4) **शिक्षा का पूर्णत:** निहित मूल्य शिक्षा शिक्षा की पूर्णता का हिस्सा होती है। यदि केवल पाठ्यक्रम पर ही ध्यान केंद्रित होता है तो शिक्षा अधूरी हो जाती है, क्योंकि छात्र अपने स्कूल और कॉलेज के चारों ओर के वातावरण से भी सीखते हैं और उनके व्यक्तिगत विकास में यह महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।
5) **कैरियर में सामाजिक नैतिकता**: निहित मूल्य शिक्षा व्यक्तिगत और पेशेवर जीवन में सामाजिक नैतिकता की बढ़ती मांग को पूरा करने में मदद करती है। यह व्यक्तिगत कैरियर में उनके समर्थन का स्रोत बनती है और उन्हें अधिक सफलता प्राप्त करने में मदद करती है।

निहीत मूल्य शिक्षा की चुनौतियाँ:

निहीत मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कई प्रकार की चुनौतियाँ हो सकती हैं, जिन्हें अध्ययन करना और समझना महत्वपूर्ण है। इन चुनौतियों को समझने के माध्यम से हम यह देख सकते हैं कि निहीत मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में कैसे सुधार किए जा सकते हैं।

1) **गुणवत्ता की कमी**: शिक्षा में गुणवत्ता की कमी एक प्रमुख चुनौती है। कई स्थानों पर शिक्षा संस्थानों में शिक्षा की गुणवत्ता में असमानता होती है, जिससे छात्रों को उच्च गुणवत्ता शिक्षा की आपूर्ति नहीं हो पाती। इस समस्या को सुलझाने के लिए सरकार को शिक्षक प्रशिक्षण, पाठ्यक्रम विकास और शिक्षा के मानकों की स्पष्टता में निवेश करना चाहिए जिससे शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ेगी और सभी छात्रों को समान शिक्षा की सुविधा मिल सकेंगी।
2) **अध्यापन प्रणाली की विपरीतता:** अध्यापन प्रणालियों की विभिन्नता एक मुख्य चुनौती है क्योंकि यह छात्रों के शिक्षण को प्रभावित करती है। अलग-अलग क्षेत्रों और सामाजिक परिस्थितियों में उपयुक्त शिक्षा प्रणालियों का विकास करना आवश्यक है ताकि छात्रों को समझाने में और सीखने में आसानी हो।
3) **शिक्षकों की कमी और उनके प्रशिक्षण**: बहुत सारे स्थानों पर शिक्षकों की कमी होती है, जिससे शिक्षा प्रणालियों में असमानता पैदा होती है। इसके अलावा शिक्षकों के प्रशिक्षण के लिए उपयुक्त संसाधनों की कमी भी होती है। शिक्षकों के प्रशिक्षण और उनके उत्कृष्टता को सुनिश्चित करने के लिए सरकार को विशेषज्ञता प्रदान करने, उनकी क्षमता और स्थिरता को बढ़ाने के लिए प्रयास करने की जरूरत है।
4) **छात्रों के पर्यापन और गंभीरता**: छात्रों के पर्यापन और उनकी गंभीरता भी एक महत्वपूर्ण चुनौती है। इसका मतलब है कि कुछ छात्र सामाजिक, आर्थिक या मानसिक कारणों से शिक्षा से दूर रहते हैं और उन्हें शिक्षा की आवश्यकता होती है। यह चुनौती उन छात्रों के लिए है जिन्हें गंभीरता के कारण विद्यालय जाने में कठिनाइयाँ होती है। इसे समझने के बाद हमें शिक्षा प्रणालियों में सुधारने के लिए उपाय ढूंढने की आवश्यकता है, ताकि इन छात्रों को भी बेहतर शिक्षा मिल सके और उनकी गंभीरता को ध्यान में रखकर उनकी शिक्षा में सुधार हो।

प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम में निहित मूल्य शिक्षा के समाधान:

प्रवर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम निहित मूल्य शिक्षा के साथ एक महत्वपूर्ण संबंध रखता है, जिसका मुख्य उद्देश्य छात्रों को केवल शैक्षिक ज्ञान के साथ-साथ नैतिक, सामाजिक और व्यक्तिगत मूल्यों को उन्हें अदृश्य रूप से सिखाना है। इसके समाधान के लिए कई उपाय हो सकते हैं-

1) **शिक्षकों की तय दिशा में प्रशिक्षण**: शिक्षको को निहित मूल्य शिक्षा के महत्व को समझने और छात्रों को इसे सिखाने के लिए उन्हें विशेष प्रशिक्षण दिया जा सकता है। शिक्षकों को यह जागरूक करना चाहिए कि उनकी आचरण और भाषा छात्रों के नैतिक विकास पर कैसे प्रभाव डाल सकती है।
2) **विशेष शिक्षा कार्यक्रम**: स्कूलों में निहित मूल्य शिक्षा को समझने और सीखने के लिए विशेष शिक्षा कार्यक्रम शामिल किए जा सकते हैं। इसके अंतर्गत विशेष शिक्षक छात्रों को नैतिक मूल्यों, सामाजिक नैतिकता, और सामाजिक जागरूकता की शिक्षा देने में मदद कर सकते हैं।
3) **विशेष गतिविधियां और परियोजनाएं:** स्कूलों में विशेष गतिविधियों और परियोजनाओं का आयोजन किया जा सकता है जो छात्रों को नैतिक और सामाजिक मूल्यों के साथ-साथ सहयोग, जिम्मेदारी और समाज सेवा के महत्व को समझने में मदद कर सकते हैं।
4) **पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा**: पाठ्यक्रमों में नैतिक शिक्षा को समाहित करने के लिए विशेष विषयों और पाठ्यक्रमों को शामिल किया जा सकता है। इसके अंतर्गत छात्रों को नैतिक दिलचस्पी और नैतिक जिम्मेदारी के सवालों पर विचार करने का मौका मिल सकता है।
5) **समाज में साझा जिम्मेदारी**: स्कूलो सामाजिक परियोजनाओं और समुदाय सेवा के कार्यक्रम का संचालन किया जा सकता है जिससे छात्र समाज में सहयोगी बनने का अभ्यास कर सकते हैं और समाज के विकास में योगदान कर सकते हैं।

4. निष्कर्ष

निष्कर्ष रूप से कहा जा सकता है कि निहीत मूल्य शिक्षा प्रयर्तमा शालाकीय पाठ्यक्रम में एक महत्त्वपूर्ण और आवश्यक पहलू है जो हमारे समाज के सामाजिक और आर्थिक सुधार की कुंजी हो सकता है। हमारे समाज में निहीत मूल्य शिक्षा को पहुंचाने के लिए प्रवर्तम पटक उपयोगी तरीके से डिजाइन किए जाने चाहिए ताकि सभी छात्र इसका लाभ उठा सके। इस लेख के माध्यम से हमने निहीत मूल्य शिक्षा के क्षेत्र में चुनौतियों को और उनके समाधानों को समझा है। इन चुनौतियों के सामना करने के लिए हमें गुणवत्ता की कमी, अध्यापन प्रणाली की विपरीतता, शिक्षकों की कमी और छात्रों के पर्यापन और गंभीरता को समझने का प्रयास करना होगा। इसके अलावा, नए पाठ्यक्रमों का विकास गुणवत्ता के मानकों की स्पष्टता और शिक्षको

को प्रशिक्षण और स्थिरता की बढ़ोतरी आवश्यक है। यह सुनिश्चित करने के लिए कि निहीत मूल्य शिक्षा समाज के सभी वर्गों और समुदायों के लिए समर्थन योग्य और पहुंचने योग्य हो और आपूर्ति और मांग के बीच संतुलन बना रहे समाज- मे समाजिक और आर्थिक समृद्धि के लिए हमें निहीत मूल्य शिक्षा को उच्च गुणवत्ता समर्पितता और उदेश्य से आगे बढ़ाने का प्रमुख माध्यम मानना चाहिए। इसके बिना हमारे समाज में सबको उचित शिक्षा की पहुंच मुमकिन नहीं हो सकती और हमारे सपने समाज में सबके लिए एक समर्थ और समर्पित नागरिक बनाने के हमारे प्रयास में कमी कर सकते हैं।

CONFLICT OF INTERESTS

None.

ACKNOWLEDGMENTS

None.

REFERENCES

Arora, Jaiprakash (2012). “Elementary education: Suggestion of syllabus of basic education” Education and Society 452 132-144.

Chatterjee, Sumitra (2015). “Development of curriculum of implicit value education in elementary education” Education and Society 48.4:287-299.

Gandhi, Mahesh (2023). “Role of parents towards implementation of value education curriculum in elementary education” Education Research Journal 41.298-112.

Gupta, Neeta (2020). “Role of teachers in the introduction of curriculum of implicit value education” Education Research Journal 38.2:89-104

Jain, Aarti (2020). “Evaluation of social support through embedded value education in elementary education” Education Research Journal 36.3:78-91.

Mishra, Pradeep Kumar (2018). “Use of technology in inculcating curriculum of embedded value education” Education and Society 55.1 45-58

Prasad, Rameshwar (2019). “Implicit value education: Basis for curriculum development in elementary education” Education Research Journal 37.1:12-26.

Rajput, Ashok Singh (2011). “New approaches to implicit value education in elementary education” Education and Society 44.3:213-228.

Roy, Manorama (2021). “Importance of economic perspective in inculcating curriculum of embedded value education in elementary education” Education Research Journal 39.4:112-126.

Sharma, Sudhir (2013). “Students’ attitudes towards inculcating curriculum of embedded value education in elementary education” Education and Society 46.2:147-159.

Singh, Arvind (2022). “Teachers’ attitudes towards inculcating curriculum of embedded value education in elementary education” Education Research Journal 40.3:67-82.

Singh, Manoj Kumar (2016). “Importance of value education curriculum in elementary education” Education and Society 49.3 212-225.

Yadav, Sunil Kumar (2017). “Development of curriculum with value education curriculum in elementary education” Education and Society M. 50.4 301-315.